Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2024 = 8.153
https://www.srjis.com/issues_data/234
Peer Reviewed & Refereed Journal, MAY-JUNE 2024, Vol- 13/83

भीष्म साहनी के नाटकों में मानवीय प्रगतिशील समाज की चेतना

सद्दाम हुसैन

पी-एच.डी., प्रदर्शनकारी कला (फिल्म और थिएटर) महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा महाराष्ट्र, 442001. ई-मेल-shussain259@gmail lcom

Paper Received On: 20 May 2024
Peer Reviewed On: 24 June 2024
Published On: 01 July 2024

Abstract

भीष्म साहनी के नाटकों में समाज की झलक स्पष्ट दिखाई देती है और लगभग हर वर्ग की सामाजिक स्थिति को अपने पात्रों के माध्यम से पाठक और दर्शकगण तक सहजता से पहुंचाते हैं। उनके नाटकों के माध्यम नारी पीड़ा का प्रस्तुतीकरण किया जाता है तथा अंततः समाज में महिलाओं की भागीदारी, समानता का पक्ष लेते हुए प्रगतिशील विचार भी प्रकट होता दिखाता है। अपनी लेखनी में मध्यकालीन धर्मांधता अनाचार में तानाशाही की सामूहिक संगति को प्रदर्शित किया है तथा यह संदेश देने की कोशिश है कि हर धर्म में मानवता का संदेश है लेकिन हुक्मरान लोग धर्म की आड़ में आम जनता पर अपना विचार थोपते हैं।

आजादी के बाद भारतीय समाज को आधुनिक विचार को अपनना सकारात्मक सामाजिक बदलाव हुआ। इसमें भारत की प्राचीन सामाजिक और धार्मिक विचारों का विशेष योगदान है। उनके नाटकों से हमे संदेश मिलता है कि समाज में सकारात्मक बदलाव हुआ है साथ ही और भी बदलाव की जरूरत है। भीष्म साहनी के नाटक समाज के द्वंद्वों और सवालों के नाटक हैं। वह समाज जो जातीय भेदभाव, सांप्रदायिकता और सत्ता के अतिचारों से जूझ रहा है। जहाँ एक ओर अभी अतीत के सामंती मूल्य अपनी पकड़ बनाए हैं, वहीं कई तरह के समांतर प्रतिरोध भी सक्रिय होने लगे है। इस नजरिये से जब हम देखते हैं तो यह स्पष्ट दिखाई देता है कि भीष्म साहनी के नाटक कालजयी हैं। उनके नाटक पूरी तरह वर्तमान के नाटक हैं।

बीज शब्द: *मानवीय पक्ष, प्रगतिशील समाज, शासक वर्ग, शोषित वर्ग, सामाजिक चेतना।*

प्रस्तावना

भीष्म साहनी के सभी नाटकों में सामाजिक संरचना का पक्ष साफ तौर पर झलकता और चित्रित होता दिखाई देता है। आज के दौर में भारतीय समाज में सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक असमानता, अंधविश्वास, धर्मान्धता, नारी उत्पीड़न आदि अनेक समस्याएं मौजूद हैं। भारतीय समाज इन सभी समस्याओं से हाथापाई कर रहा है। ये समस्याएं संरचनात्मक रूप से शक्तिशाली होती जा रहा है। धर्मान्धता सामाजिक शक्ति के रूप में विकराल होता दिखाई देता है। यह समाज में नकारात्मक प्रभाव डालता है जिससे सामाजिक ताना-बाना कमजोर होता है। समाज में सौहार्द की कमी होती जा रही है। धार्मिक कट्टरता और अन्धविश्वास समाज में वृहद् तौर पर असर डालता है। इन्हीं समस्याओं के समाधान के लिए भीष्म साहनी अपने नाटकों में हानुश जैसे पात्रों का सहारा लेते हैं। जिसमें वे

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

दिखाते है कि सत्ता अपनी शक्ति का उपयोग कर जनमानस के विचारों को प्रभावित करती है। सत्ताधारी तय करता है कि समाज उसके विचारों एवं उसके हुक्म का पालन करे। भीष्म साहनी का नाटक आम आदमी की आवाज़ है।

'कबीरा खड़ा बाज़ार में' नाटक में लेखक कबीर की वाणी के माध्यम से समाज में फैले अंधविश्वास,मज़हबी कट्टरता, जात-पात की नकारात्मक समझ, छूआछूत, नारी उत्पीड़न की समस्याएं आदि को रेखांकित करते हैं। समाज की विभिन्न समस्याओं की ओर इशारा कर उसका हल भी तलाशते दिखाई देते हैं। शहंशाह सिकंदर लोधी शक्ति का केंद्र होने के बावजूद कबीर की आवाज़ को दबा नहीं पाता है। यही लेखक की मजबूत कड़ी है। इससे जाहिर होता है कि समाज में आम जन का महत्त्व है। असल में सामाजिक और राजनैतिक शक्ति जनमानस के हाथों में है जो लोकतान्त्रिक पक्ष की ओर इशारा करता है। भारत की पहचान 'अनेकता में एकता' से है। यहाँ दुनिया की सबसे पुरानी सभ्यता ने जन्म लिया।भारत भूमि विभिन्न संस्कृतियाँ के गठजोड़ की गवाह है। अनेकों धर्म, संप्रदाय, जातियों की भूमि स्थल है।

आधुनिक हिंदी नाट्यलेखन में अनेक नाटककार हुए। उन सब में भीष्म साहनी एक सशक्त हस्ताक्षर के रूप में जाने जाते हैं।उन्होंने समसामयिक मुद्दों पर महत्वपूर्ण नाटकों का लेखन कार्य किया है तथा हिंदी रंगमंच में सराहनीय योगदान दिए। उनके नाटकों में सामाजिक संरचना विभिन्न रूपों में स्पष्ट दिखाई देती है। इससे समाज के विभिन्न पक्षों को देखने कामौका मिल सकता है। यह समाज सामाजिक और राजनैतिक शक्ति संरचना के इर्द-गिर्द संचालित होता है।-*"लेखक का अपना सत्य जीवन के सत्य से निराला नहीं होता, न ही जीवन का सत्य और लेखक का सत्य दो अलग-अलग सत्य होते हैं। एक ही सत्य होता है और यह जीवन का सत्य होता है। उसको साहित्य वाणी देता है।"*

इससे समाज के एक प्रगतिशील विचार को बढ़ावा मिलता है। तथा समाज के लिए शक्ति को समझने में सिद्ध होगा। नाटककार भीष्म साहनी की लेखनी समाज में प्रासंगिक हैं।

भारतीयसाहित्य जगत में भीष्म साहनी का स्थान सर्वथा अग्रणीय है। एक ऐसे नाटककार जो अपनी लेखनी मेंभारत की आत्मा को स्पर्श करते दिखाई देते हैं।देश की आज़ादी के लगभगदशकबाद भारतीय जन मानसके समक्ष भीष्म साहनी उपन्यासकार, कहानीकार, नाटककार के रूप सिद्धहस्तता हासिल कर चुके थे।स्वातंत्र्योत्तर नाट्यकृति रचनाकारों में प्रियतम रचनाकार और अग्रगण्य स्थान पर विराजमान थे। डॉ. विवेक द्विवेदी भीष्म साहनी को कलाकार के रूप में उनकी तारीफ में कहते हैं-*"व्यक्ति कितनी भी ऊंचाई क्यों न छू ले, परंतु वह अगर एक अच्छा इंसान नहीं बन सका तो उसकी सारी उपलब्धि एक दिन नकार दी जाती है। इतिहास के पन्नों में इतने चरित्र भरे पड़े हैं, जिनकी उपलब्धि उन्हें ऐतिहासिक चरित्र बनाती है। परंतु स्वभाव की जड़ता, असहयोग भावना, खुद को सबकुछ समझना और तंगदिली ने उन्हें हाशिये पर ला दिया है। फिर लेखक, साहित्यकार एवं कलाकार होने की पहली शर्त वह व्यक्ति अच्छा इंसान हो। भीष्म जी जितने बड़े कलाकार हैं, उससे भी बड़े इंसान हैं।"*

उसी शहर के अन्य युवकों में नये वर्ष दिन ब्रिटिश सम्राट के संदेश सुनने की होड़। भीष्म साहनी उस दौर के अनुभव को इस प्रकार साझा करते हैं-"यों अंग्रेजीयत तो हर बात में हलकती थी। गर्मियों की छूटियों के बाद,

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

कॉलेज खुलने के बाद जब अंग्रेज़ प्रोफ़ेसर घर से लौटते तो लड़के इस ताक में रहते कि प्रोफ़ेसर कैसी पोशाक पहनकर आए हैं। जिस ढंग के कपड़े वे पहन रहे होते, हिंदुस्तानी लड़कों के लिए देखते ही देखते, वही फैशन बन जाता।"

भीष्म साहनी प्रसिद्ध नाटककार, साहित्यकार, कहानीकार थे।उनकी लेखनी संवेदनशीलता की गहराई छूती है। यथार्थ चित्रण का स्पष्ट अनुभव पाठक गण पाते हैं।यही साहित्य की सर्वोच्चता को दर्शाती है।उनके नाटकों की संजीदगी को पढ़ते वक़्त अनुभव किया जा सकता है। उनके पात्र हमारे इर्द गिर्द अपनी दिनचर्या में संलिप्त प्रतीत होते हैं।

भीष्म साहनी जिस शहर में पैदा हुए। वह दो भागों में बंटा हुआ था। रावलपिंडी छावनी और रावलपिंडी। छावनी में तथाकथित संभ्रांतजन रहते थे। वह अंग्रेज़ होते थे।जहाँ नाचघर, सिनेमा, बड़े-बड़े ऑडिटोरियम, मंच आदि मौजूद उस जगह को सुशोभित कर रहे थे। इस तरह के किसी भी जगह पर भारतीय लोगों का प्रवेश वर्जित था। अंग्रेज़ मनोरंजन कर बाहर सैर पर निकलते। सड़क के किनारे चलते आम शहरियों को हंसी खेल में अपने बूटों से मरते चलते। एक तरफ अँग्रेजी भाषा और साहित्य से लगाव तथा दूसरी तरफ ब्रिटिश लोगों का काम, हरकतें कारगुजारी भीष्म साहनी को क्षुब्ध कर देता था। उनके अत्याचार को देखकर हीनता महसूस करते थे। हर जगह अपमान और हिकारत का वातावरण व्याप्त था। अजीब लगता है जिस शहर में भगत सिंह जैसे क्रांतिकारी ने धूम मचाई, ब्रिटिश हुकूमत के बहरे कान को धमाके की आवाज़ सुनाई। उसी शहर के अन्य युवकों में नये वर्ष दिन ब्रिटिश सम्राट के संदेश सुनने की होड़। भीष्म साहनी उस दौर के अनुभव को इस प्रकार साझा करते हैं-*"यों अंग्रेजीयत तो हर बात में हलकती थी। गर्मियों की छुटियों के बाद, कॉलेज खुलने के बाद जब अंग्रेज़ प्रोफ़ेसर घर से लौटते तो लड़के इस ताक में रहते कि प्रोफ़ेसर कैसी पोशाक पहनकर आए हैं। जिस ढंग के कपड़े वे पहन रहे होते, हिंदुस्तानी लड़कों के लिए देखते ही देखते, वही फैशन बन जाता।" 3*

'हानुश' में व्यक्त पारिवारिक जीवन की त्रासद स्थितियों को रेखांकित करते हुए लेखक ने परिवार के जीने के संघर्ष के कई क्षणों को उद्घाटित किया है। पति-पत्नी के सम्बंधों के साथ ही सन्तानों के सम्बन्धों को एक निश्चित सूत्र में नहीं बंधा जा सकता। हानुश की घड़ी बनाने की धुन के कारण पति-पत्नी के तनावपूर्ण संबंधों को व्यक्त करती कात्या कहती है, "मैंने आज तक आपके सामने मुँह नहीं खोला, लेकिन अब मैं मजबूर हो गयी हूँ । इस तरह से यह घर नहीं चल सकता।"

मानव जीवन में रोटी, कपडा और मकान यह मुलभूत आवश्यकताएँ महत्वपूर्ण हैं। तीनों चीजों की घड़ी बिगड जाये तो परिवार में समस्याएँ खड़ी हो जाती है।

मध्ययुगीन परिवेश में समाज के सामने कई पारिवारिक समस्याएँ थी। 'हानुश'नाटक में घड़ीसाज हानुश एक निम्न श्रमिक वर्ग का प्रतिनिधि है । उसकी समस्याएँ पूरे निम्न वर्गीय समाज की समस्याएँ बन जाती हैं। हानुश का परिवार रोटी, कपडा, दवाई एवं इंधन की समस्याओं से ग्रस्त है । कात्या पारिवारिक जटिलताओं के कारण

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

पति हानुश को भला बुरा कहती है । किन्तु उन जटिलताओं से परिवार को निजात दिलाने के लिए प्रयत्नरत भी रहती है ।

'कबिरा खड़ा बाज़ार में' भीष्म साहनी का एक प्रसिद्ध नाटक है, जो संत कबीर के जीवन और उनके समाज सुधारक के रूप में योगदान को दर्शाता है। इस नाटक में साहनी ने कबीर के जीवन और उनके समय की सामाजिक शक्ति संरचना को विस्तार से चित्रित किया है।

साहनी के अनुसार, कबीर को अक्सर उनके काल और स्थान के संदर्भ से काटकर, उनकी सामाजिक भूमिका को गौण बताते हुए, अध्यात्म के आकाश में विचरते दिखाया जाता है, जो कि उनके प्रति अन्याय है। नाटक में कबीर के जीवन के विभिन्न पहलुओं को दर्शाया गया है, जैसे कि उनका समाज को देखने का नज़रिया, उनके संघर्ष, और परिवार के संबंध में उनका दृष्टिकोण।

साहनी ने इस नाटक के माध्यम से यह भी दिखाया है कि कबीर के समय में बाज़ार केवल व्यापार का केंद्र नहीं था, बल्कि सामाजिक और धार्मिक गतिविधियों को संचालित करने वाला केंद्र भी था। बाज़ार में साधुओं के अखाड़े, मुल्ला-पंडितों के प्रवचन, और सामाजिक दंगे भी होते थे। इस प्रकार, कबीर का बाज़ार में खड़ा होना उनका उस समय की परिवर्तन-विरोधी शक्तियों का प्रतिरोध था।

इस नाटक के माध्यम से साहनी ने कबीर के अध्यात्म-पक्ष की आधारभूमि में ही उनके विराट व्यक्तित्व के विकास को दर्शाया है, और यह भी बताया है कि अध्यात्मवादियों में सम्वेदना का होना अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस प्रकार, 'कबिरा खड़ा बाज़ार में' नाटक के माध्यम से भीष्म साहनी ने संत कबीर के जीवन और उनके समय की सामाजिक शक्ति संरचना की गहराई से व्याख्या की है, जो आज भी हमारे लिए प्रासंगिक है।

भक्ति आंदोलन काल के कबीर एक सशक्त हस्ताक्षर कवि रहे हैं। उन्होंने अपने कविता के माध्यम से समाज में व्याप्त बुराइयों को धर्मांधता, सामाजिक असमानता, रूढ़िवादी विचारों को उजागर करने का कार्य किया है। सत्संग के माध्यम से लोगों को इकट्ठा करते हैं। उन्हें समझाते हैं कि ईश्वर ने सबको बराबरी के साथ जीने का हक दिया है फिर एक व्यक्ति के साथ अलग व्यवहार वहीं दूसरी व्यक्ति पर अत्याचार किसी भी सभ्य समाज के लिए ठीक नहीं है अतः कबीर अपनी कविता आमजन की भाषा में बोलते हैं। सामाजिक शक्ति को परिभाषित करते हैं। समाज में समरसता आए, इसके लिए आवाज उठाते हैं।

'कबिरा खड़ा बाज़ार में'इस नाटक में किसी विधवा ब्राह्मण स्त्री द्वारा पुत्र को जन्म देना हो । वह पुरुषी भोगवादी दृष्टि का ही शिकार है । यहीं नहींसाधूमहात्माओं की दृष्टि में भी स्त्री महत्वहीनरही है । इस संदर्भ में 'कबिरा खड़ा बाज़ार में'नाटक का पहला नागरिक कहता है-"सुना है, सौ-सौ स्त्रियों के साथ भोग करते है, फिर भी वीर्यपात नहीं होता" सौ-सौ-स्त्रियों से भोग की यह साधू- महात्माओं की वृत्ति नारी की दयनीय व शोषणीय अवस्था को प्रदर्शित करती है।

भारतीय समाज में नारी को पितृसत्तात्मक व्यवस्था नेउचित स्थान नहीं दिया है । आदिकाल से नारी का शोषण विभिन्न स्तरों पर किया जा रहा है। बेटा घर का चिराग है ऐसा बोला जाता है । स्त्री को परायेपन का अहसास कराया

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

जाता है । विवाह के पश्चात पति, तत्पश्चात् पुत्रों की माँ और बेटी पराया धनइस पुरुषमानसिकता के कारण नारी को बेटी के रूप में भी समस्त अधिकार नहीं मिलते हैं उसका शोषण होता रहता है । अभावों एवं संघर्षों से जूझती, विषमता, विपन्नता और सामाजिक व्यवस्था में घिरी हुई नारी का चित्रण भीष्म साहनी ने अपने नाटकों में किया है।

पारिवारिक स्तर पर घरेलू कामों का निर्वाह भी स्त्री की ही जिम्मेदारी समझी जाती है। यही नहीं जीवन के सभी क्षेत्रों में वह पुरुषों के साथ मिलकर काम करती है। इसके बावजूद भी उसके श्रम का मूल्य कम आंका जाता है, या होता ही नहीं है। भीष्म साहनी जी के नाटकों में विभिन्न स्तरों पर नारी के सामाजिक शोषण को दर्शाया गया है।

भीष्म साहनी के सभी नाटकों में नारी की सामाजिक प्रतिष्ठा पुरुषों से निम्न हीहै। 'माधवी'नाटक में माधवी का चरित्र केंद्रीय होते हुए भी वह 'शोषिता'का ही चरित्र है। वह अपने पिता ययाति के द्वारा दान में दी जाती है । गालव उसे अपनी गुरुदक्षिणा हेतु राजाओं के रनिवासों की 'भोग्या'बनाता है । तीन-तीन राजाओं की 'भोग्या'बनने के बावजूद उसका कोई सामाजिक अस्तित्व है ही नहीं। जिस पर पुरुष का ही पुरा अधिकार है। उसका अपना कोई अस्तित्व और गौरव ही नहीं है । 'माधवी'नाटक में पुरुष स्त्री का सीढ़ी के रूप में उपयोग करता है और काम होते ही उसे ठुकरा देता है । नाटक में सभी पुरुष पात्र माधवी को सुखी देखने की बात तो करते है, पर सभी अपने स्वार्थ की बात आते ही, उसे नहीं छोडते है। माधवी अपने बेटे को तुरन्त छोड़कर जाने की प्राणान्तक पीड़ा झेलते हुए गालव के साथ चली जाती है। उसका मातृ हृदय आहत होता है, माधवी अपने बेटे की याद का जिक्र करती है तो उसे कर्तव्यहीनता, दायीत्वहीनता का लांछन सुनना पड़ता है । माधवी के शब्दों में ही कहे तो, "पिता ने मुझे सौंपकर अपना कर्तव्य निभा दिया और मुनिकुमार ने घोडे बटोरकर अपना कर्तव्य पूरा कर दिया । एक दानवीर बन गया, दूसरा आदर्श शिष्य । और माधवी ? मोह की मारी माधवी कर्तव्य से गिर गई । वह किसी बड़े काम का दायित्व वहन नहीं कर सकती । यहीं ना ?... इस दुर्बल नारी का भी कोई अस्तित्व नहीं है, न उस लम्पट राजा के लिए, न अयोध्या नगरी के लिए, न मेरे पिता के लिए और शायद तुम्हारे लिए भी नहीं गालव । सचमुच मुझे स्वतन्त्रता मिली है। मैं मुक्त हुई हूँ। माधवी न घर की न घाट की "। माधवी जिसे चिरकोमार्य और चक्रवर्ती राजा को जन्म देने का वर प्राप्त है। इसीलिए मात्र दो सौ घोड़ों के लिए वह पहले राजा हर्यश्व के रनिवास में रहती हैं, बाद में दिवोदास,राजा उशीनर और अन्त में विश्वामित्र द्वारा भोगी जाने के बावजूद औरउन्हें वंश देने के बावजूद भी उसका कोई पति नहीं है और न ही व किसी की माँ ।पत्नी और माँ की सामाजिक प्रतिष्ठा उसे तो मिलती ही नहीं बल्कि उसे पुरुष व्यवस्था के द्वारा अपनी स्वार्थ पूर्ति के लिए वेश्या बनने के लिए अभिशप्त किया जाता है। माधवी तो उन राजाओं के लिए अपनी मिल्कियत के लिए जायज उत्तराधिकारी उत्पन्न करने की एक मशीन बनकर रह गयी है । इतना सब कुछ करने के बाद, सह लेने के बाद, बदले में उसे क्या मिलता है ? कुछ नहीं। भीष्म साहनी का 'माधवी' नाटक नारी शोषण और अन्याय की दृष्टि से एक अत्यंत समकालीन यथार्थका आधुनिक नाटक है।
नारी सामाजिक परिवेश में पुरुष के हाथों सभी स्तरों पर शोषित है। भावनात्मकऔर शारिरिक शोषण ही नहीं बल्कि उसका स्वातंत्र्य भी नियंत्रित किया जाता है।

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

धर्मग्रंथों ने भी उसी से उसकी स्वतंत्र अस्तित्व चेतना को विमोहित किया हुआ है, धर्मग्रन्थों में उसकी तुलना पृथ्वी के साथ की है जिस भाँति पृथ्वी संसार भर का वहन करती है, वैसे ही सभी दायित्त्वों का वहन करती है, उसकी शक्ति सेवा में है, पुरुष महत्वकांक्षी है, पर स्त्री का प्रमुख गुण त्याग, सेवा है । नारी भगवान की ऐसी सृष्टि है कि जो अपनी कोमलता के कारण सदा किसी-न-किसी का सहारा लिये रहती है। जैसे लता को वृक्ष का सहारा चाहिए, वैसे ही स्त्री को पुरुष का सहारा चाहिए।

'माधवी' नाटक में माधवी का नारीत्व पुरुषों के वर्चस्व में लिप्त है । धर्मग्रन्थों का उदाहरण देकर पुरुषसत्ता व्यवस्था नारी पर अपना अधिकार बनाये रखने के लिए प्रयास करती है । भीष्म साहनी जी ने स्त्री की पीड़ा को अपने नाटकों में प्रस्तुत किया है । यह व्यवस्था माधवी को कर्तव्यनिष्ठ, त्यागी, सेवा, समर्पिता, आज्ञाकारिणी बनाकर अत्यंत सहजता से शोषिता बनने के लिए विवश कर देती है । वह एक स्त्री है यह बार-बार उल्लेखित कर उसके स्वतन्त्र अस्तित्व चेतना को मारकर शोषण के लिए अभिशप्त किया जाता है। मानव होते हुए भी उसकी अपनी कोई स्वतंत्र पहचान नहीं है और पुरुषसत्ता यह कभी स्वीकार भी नहीं करती । इसी कारण इस विचार का समर्थन कथावाचक करते हुए कहता है-"पुरुष को भगवान ने धीर-गंभीरबनाया है, पर स्त्री के स्वभाव में चंचलता पर पुरुष का अंकुश सदा बने रहना चाहिए। इसमें अन्ततः स्त्री का ही लाभ है।" भीष्म साहनी ने प्रस्तुत नाटक में पुरुषसत्ता व्यवस्था के निहित पाखण्ड को उजागर किया है।'माधवी'नाटक में भी माधवी ने गालवकी गुरुदक्षिणा जुटाने में सहायता की।माधवी'में स्त्री-पुरुषो का द्वंद्व बार-बार उमड़कर आता है, किन्तु माधवी का संयत भाव और गालव के प्रति उसका प्रेम उस पर हावी हो जाता है ।

निष्कर्ष

लेखक राजनीति के आगे चलने वाली मशाल है और लेखक का संवेदन अपने समय के यथार्थ को महसूस करना और आंकना है। अंतद्वंद्व और अन्तर्विरोध के प्रति सचेत होना है। इसी दृष्टि से उसकी पकड़ समाज के भीतर चलने वाले संघर्ष पर ज्यादा मजबूत होती है। और परिवर्तन की दिशा का भी भास होने लगता है। इसी के बल पर वह राजनीति से आगे होता है और पीछे नहीं। भीष्मजी ने अपनी रचनाओं में मुख्य रूप से मध्य-वर्ग एवं निम्न-वर्ग के जीवन का यथार्थ चित्रण करते हुए दोनों वर्गों को समानांतर रूप से विश्लेषित करते हुए उनके जीवन के अंतर्विरोधों एवं संघर्ष को स्पष्ट किया है |

वस्तुत: उन्होंने वर्ग-वैषम्य के यथार्थपरक चित्रण के द्वारा संघर्ष के विविध रूपों को व्यक्त करते हुए आधुनिक-बोध की इस विशेष प्रवृत्ति को और भी स्पष्टता से उजागर किया है।

जिस दौर में हम आज हैं, वह एक ऐसा समय है, जिसमें भीष्म साहनी के नाटक बेहद प्रासंगिक हैं. प्रगतिशील और समतावादी रचनाकार भीष्म जी प्रेमचंद की परम्परा को आगे ले जाने वाले, आम आदमी को रचना में उसकी पुरी ताकत और कमजोरियों के साथ खड़ा करने वाले लेखक हैं. उनकी रचनाएँ साम्प्रदायिकता एवम् वर्गरचना का सिर्फ़ निषेध नहीं करतीं, बल्कि उनके कारणों की तह तक जाती हैं और हमें उस नब्ज को पकड़ने के लिये उकसाती है।

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

मार्क्सवाद से प्रभावित होने के कारण भीष्म साहनी समाज में व्याप्त आर्थिक विसंगतियों के त्रासद परिणामों को बड़ी गंभीरता से अनुभव करते थे। पूंजीवादी व्यवस्था के अंतर्गत वह जन सामान्य के शोषण को सामाजिक विकास में सर्वाधिक बाधक और अमानवीय मानते थे। उन्होंने आर्थिक विषमता और उसके दुःखद परिणामों को बड़ी मार्मिकता से उद्‌घाटित किया है, जो समाज के स्वार्थी कुचक्र का परिणाम है और इन दुखद स्थितियों के लिए दोषपूर्ण समाज व्यवस्था उत्तरदायी है।

संदर्भ

भीष्म साहनी, श्याम कश्यप, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, 2016, पृ. सं. 37
भीष्म साहनी, उपन्यास साहित्य, डॉ. विवेक द्वेवेदी, पृ.सं. 33
आज का अतीत, पृ.75
सं, साहनी, कल्पना.(2011). संपूर्ण नाटक 1. हानुश. राजकमल प्रकाशन: नई दिल्ली. पृष्ठ.35
सं, साहनी, कल्पना.(2011). संपूर्ण नाटक 1. कबिराखड़ा बाज़ार में. राजकमल प्रकाशन: नई दिल्ली. पृष्ठ.168
सं, साहनी, कल्पना.(2011). संपूर्ण नाटक 1. माधवी. राजकमल प्रकाशन: नई दिल्ली. पृष्ठ.284.
वही, माधवी. पृष्ठ सं-304

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies